Quadrant II –Notes

Programme: Bachelor of Arts (Second Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC 103

Paper Title: Hindi Sahitya ka Aadikaal Evam Madhyakaal: Parichayatmak Adhyayan

Unit: 03

Module Name: रीतिकाल: सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश

Module No: 14

Name of the Presenter: Ms. Shambhavi Naik

Notes:

रीतिकाल: सामाजिक परिवेश

किसी भी काल की राजनैतिक परिस्थिति का प्रभाव तत्कालीन समाज पर पड़ता है। उसी प्रकार रीतिकालीन राजनीतिक कूटनीति का प्रभाव समाज पर भी पड़ा।

रीतिकालीन युग को विलास प्रधान युग कहा जाता है। विलासिता मुगल वंश के आरंभ काल से चली आ रही थी। मुगल बादशाहों के महल अलंकारों से सजाएँ जाते थे। बादशाह तथा उनकी पत्नियों के वस्त्रों और आभूषणों पर असीम धन खर्च होता था। महलों के लोग भी बहुमूल्य रत्नों से अलंकृत रहते थे। दरबारियों के पास भी रत्नों और मणियों की कमी नहीं थी। मुगल बादशाहों का जहाँ इतना वैभव और ऐश्वर्य था वहीं भोग-विलास भी था। उनके हरम में

हजार-हजार युवतियाँ रहा करती थी। ये विविध जाति और वर्णों से थी। वैश्याओं का दरबार में खूब सम्मान होता था।

मुगल बादशाहों की इस ऐश्वर्य प्रियता और विलासिता का प्रभाव समाज पर पड़ा और समाज दो वर्गों में विभक्त हुआ - उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग। उच्च वर्ग (भोक्ता वर्ग) में राजा, रईस, अमीर, मनसबदार, सामंत आदि थे। निम्न वर्ग उत्पादकों का था जिसमें नौकरी पेशा के लोग, श्रमिक, कृषक आदि आते थे। सारे देश में मनसबदारों और अमीरों का जाल फैला था।

उच्च वर्ग विलासिता और वैभव में अखंड डूबा रहता था। उच्च वर्ग का संबंध राजदरबार के समृद्ध जीवन से था। सूरा और सुंदरी का सेवन तो जैसे उनका जन्मसिद्ध अधिकार बन गया था।

नारी पुरुष की शक्ति न रहकर भोग विलासी जीवन का साधन बनकर रह गई थी। बहू-विवाह, दहेज प्रथा, बाल विवाह जैसे प्रथाओं का प्रचलन था। रीतिकाल के कवियों ने राजा के यही व्यक्तित्व को देखकर नायिकाओं के चित्र खींचें है, बिहारी कहते हैं - "अंग-अंग नग जगमगै", रीतिकाव्य में जिस शृंगारी जीवन की झलक मिलती है, वह इसी उच्च वर्ग के वासनामय जीवन का दर्पण कहा जा सकता है।

समाज में सबसे बुरी हालत किसान और मजदूरों की थी। यह समाज का उत्पादक वर्ग था। इतिहासकार कार्ल मोरलैन्ड ने लिखा था कि, "जुलाहे नंगें रहकर दूसरों के लिए वस्त्र तैयार करते थे। किसान भूखे रहकर नगरवासियों के लिए अन्न उत्पन्न करते थे"। स्त्री-पुरुष नंगा और भूखा जीवन बिताने के लिए विवश थे। निर्धन कृषक, मजदूर तथा थोड़ी आय वाले लोगों को भरपेट भोजन प्राप्त नहीं होता था। शक्तिशाली तथा धनी लोग उनका शोषण करते थे। सुंदर स्त्रियों का अपहरण होता था। घूसखोरी तथा लूट-मार, ठगी की घटनाएँ भी सामान्य थी।

निरंतर होनेवाले युद्धों के कारण किसानों की फसल नष्ट हो जाती थी। जन साधारण में अंधविश्वास तथा रूढ़ियाँ घर कर गई थी। ज्योतिषियों की वाणी पर उनका ज्यादा विश्वास था। जनता अशिक्षित थी।

रीतिकाल: सांस्कृतिक परिवेश

सामाजिक परिस्थिति के समान सांस्कृतिक परिस्थिति भी अत्यंत दयनीय थी। भक्तिकाल में कविता की जो चार धाराएँ प्रारंभ हुई थी वह इस युग में समाप्त होती हुई दिखाई दे रही थी। संत कवियों का जतियों संबंधी विरोध, सूफियों का प्रेम यह सब रीतिकाल में समाप्त हो गया। क्योंकि इस युग में कवि समाज की चिंता नहीं कर रहा था।

रीतिकाल का कवि समाज के मध्यवर्ग से आया था और राजा के दरबार से जुड़कर वह उच्चवर्ग का व्यक्ति बन गया था। रीतिकाल का कवि सिर्फ राजाओं को प्रेरित करने के लिए कविताएँ लिखता था। सगुण भक्ति काव्य भी पतन के ओर जा रहा था। कवि तुलसीदास द्वारा जो आदर्श स्थापित किया गया था वह रीतिकाल तक आते-आते समाप्त हो गया था। रीतिकाल तक आते-आते भक्ति और धर्म कमजोर पड़ गया और प्रेम प्रधान होता गया। रीतिकाल का कवि केवल राधा-कृष्ण का नाम लेता था। उनके माध्यम से प्रेम का वर्णन करता था। मंदिरों की धन की अधिकता के कारण वहाँ के पुजारियों में भोगविलास बढ़ता गया।

मुगल बादशाहों ने शिक्षा के प्रसार के लिए भी पहल की थी। बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ आदि सब ने मदरसों का निर्माण करवाया था। इतिहास लेखन, साहित्य-सृजन एवं अनुवाद कार्य को भी प्रोत्साहन दिया था। उस समय दरबार में सरकारी इतिहासकार होते थे, जो इतिहास लेखन के लिए अधिकृत किए गए थे।

इस युग में संगीत कला को भी दरबारों में संरक्षण मिला। दरबारों में गायकों, वादकों एवं नर्तकों की पूरी टोली मौजूद होती थी। गुणवंत कलाकारों को अशर्फियाँ दी जाती थी। शाहजहाँ के दरबार में लाल खाँ और पंडित जगन्नाथ जैसे संगीत कलाकार थे।

इसी सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवेश के कारण रीतिकाव्य का सृजन हुआ।

रीतिकालीन साहित्य को तीन भागों में विभाजित किया गया है।

1. रीतिसिद्ध काव्यधारा
   - कवि बिहारी
2. रीतिबद्ध काव्यधारा
   - चिन्तामणि, मतिराम, देव, भूषण, केशव
3. रीतिमुक्त काव्यधारा
   - आलम, घनानंद, बोधा, ठाकुर

निष्कर्षतः रीतिकालीन समाज दिशाहीन हो गया था। विलासिता के इस वातावरण में उच्चवर्ग जर्जर और पतन की ओर जा रहा था। उस समय का कवि अपना कर्तव्य भुलकर राजा को खुश करने के लिए और उससे धन कमाने के लिए नारी के अंगों का वर्णन करता था। 'यथा राजा तथा प्रजा' की उक्ति इस काल पर पूर्ण रूप से चरितार्थ होती है।